श्री लक्ष्मि हृदया स्तोत्रम्

श्री मनोहरे लकुमि तवपद तामरसयुग भजिपे नित्यदि
सोमसोदरि परममंगले तप्तकांचनले |
सोमसूर्यसुतेजोरूपले हेमसन्निभ पीतवसनले
चामीकरमय सर्वभूषण जालमंडितलेPsभूषण जालमंडितले ||१||
बीजपूरित हेमकलशव राजमान सुहेम जलजव
नैज करदलि पिडिदुकोंडु भकुतजनततिगे |
माजदले सकलेष्ट नीडुव राजमुखि महदादिवंद्यले
मूजगत्तिगे माते हरिवामांकदोलगिर्पPsहरिवामांकदोलगिर्पे||२||
श्री महत्तर भाग्यमानिये स्तौमि लकुमि अनादि सर्व सुकाम
फलगलनीव साधन सुखवकोडुतिर्प |
कामजननिये स्मरिपे नित्यदि प्रेमपूर्वक प्रेरिसेन्ननु
हे महेश्वरि निन्न वचनव धरिसि भजिसुवेनुPsधरिसि भजिसुवेनु||३
सर्व संपदवीव लकुमिये सर्व भाग्यवनीव देविये
सर्वमंगलवीव सुरवर सार्वभौमियले |
सर्व ज्ञानवनीव ज्ञानिये सर्व सुखफलदायि धात्रिये
सर्वकालदि भजिसि बेडिदे सर्व पुरुषार्थPsबेडिदे सर्व पुरुषार्थ ||४ ||
नतिपे विज्ञानादि संपद मतिय निर्मल चित्र वाक्पद
ततिय नीडुवदेनगे सर्वद सर्व गुणपूर्णे |
नतिप जनरिगनंतसौख्यव अतिशयदि नीनित्त वार्तेयु
विततवागिहदेंदु बेडिदे भक्तवत्सललेPsबेडिदे भक्तवत्सलले||५||
सर्व जीवर हृदय वासिनि सर्व सार सुभोक्त्रे सर्वदा
सर्व विश्वदलंतरात्मके व्याप्ते निर्लिप्ते |
सर्व वस्तु समूहदोलगे सर्व कालदि निन्न सहितदि
सर्व गुण संपूर्ण श्री हरि ताने इरुतिर्पPsश्री हरि ताने इरुतिर्प||६||
तरिये नी दारिद्य शोकव परिये नीनज्ञान तिमिरव
इरिसु त्वत्पद पद्ममन्मनो सरसि मध्यदलि |
चरर मनसिन दुःख भंजन परम कारणवेनिप निन्नय
करुणपूर्ण कटाक्षदिंदभिषेक नी माडेPsअभिषेक नी माडे ||७ ||
अंबा एनगे प्रसन्नलागि तुंबि सूसुव परम करुणा –
वेंब पीयुष कणदि तुंबिद दृष्टि तुदियिंद |
अंबुजाक्षिये नोडि एन्न मने तुंबिसीगले धान्य धनगल
हंबलिसुवेनु पादपंकज नमिपेननवरतPsनमिपेननवरत ||८ ||
शांतिनामके शरण पालके कांतिनामके गुणगणाश्रये
शांतिनामके दुरितनाशिनि धात्रि नमिसुवेनु |
भ्रांतिनाशनि भवद शमदिंश्रांतनादेनु भवदि एनगे नितांत
धन निधि धान्य कोशवनित्तु सलहुवुदुPsइत्तु सलहुवुदु ||९ ||
जयतु लक्ष्मी लक्षणांगिये जयतु पद्मा पद्मवंद्यले
जयतु विद्या नामे नमो नमो विष्णुवामांके |
जयप्रदायके जगदिवंद्यले जयतु जय चेन्नागि संपद
जयवे पालिसु एनगे सर्वदा नमिपेननवरतPsनमिपेननवरत||१०||

श्री लक्ष्मि हृदया स्तोत्रम्

जयतु देवी देव पूज्यले जयतु भार्गवि भद्र रूपले
जयतु निर्मल ज्ञानवेद्यले जयतु जय देवी |
जयतु सत्याभूति संस्थिते जयतु रम्या रमण संस्थिते
जयतु सर्व सुरत्न निधियोलगिर्पे नित्यदलिPsनिधियोलगिर्पे नित्यदलि ||१ ||

Advertisements

REPORT THIS AD

जयतु शुद्धा कनक भासले जयतु कांता कांति गात्रले
जयतु जय शुभ कांते शीघ्रदे सौम्य गुण रम्ये |
जयतु जयगलदायि सर्वदा जयवे पालिसु सर्व कालदि
जयतु जय जय देवि निन्ननु विजय बेडिदेनुPsविजय बेडिदेनु ||२ ||
आव निन्नय केलेगलिंदलि आ विरिंचियु रुद्र सुरपति
देव वरमुख जीवरेल्लरू सर्वकालदलि |
जीवधारणे माडोरल्लदे आव शक्तियू काणेनवरिगे
देवि नी प्रभु निन्न शक्तिलि शक्तरेनिसुवरुPsशाक्तरेनिसुवरु ||१३ ||
आयु मोदलागिर्प परमादाय सृष्टिसु पालनादि स्वकीय
कर्मव माडिसुवि निनगारुसरियुंटे |
तोयजालये लोकनाथले ताये एन्ननु पोरेये एंदु
बायि बिडुवेनु सोकनीयन जाये मां पाहीPsजाये मां पाही ||४ ||
बोम्म एन्नय फणेय फलकदि हम्मिनिंदलि बरेद लिपियनु
अम्म अदननु तोडेदु नी ब्यरिब्यारे विधदिंद |
रम्यवागिह निन्न करुणा हर्म्यदोलगिरुतिर्प भाग्यव
घम्मने दोरेवंते ई परि निर्मिसोत्तमलेPsनिर्मिसोत्तमले ||५ ||
कनक मुद्रिके पूर्ण कलशव एनगे अर्पिसु जनुम जनुमदि
जननि भाग्यदभिमानि निनगभिनमिसि बिन्नेपे |
कनसिलादरु भाग्य हीननु एनिसबारदु एन्न लोकदि
एनिसु भाग्यद निधियु परि परि उणिसु सुखफलवPsओणिसु सुखफलव ||१६ ||
देवि निन्नय कलेगलिंदलि जीविसुवुदी जगवु नित्यदि
भाविसीपरि एनगे संतत निखिल संपदव |
देवि रम्य मुखारविंदले नी ओलिदु सौभाग्य पालिसु
सेवकाधमनेंदु ब्यागने ओलिये नी एनगेPsअम्माPsओलिये नी एनगे ||१७ ||
हरिय हृदयदि नीने नित्यदि इरुव तेरदलि निन्न कलेगलु
इरलि एन्नय हृदय सदनदि सर्वकालदलि |
निरुत निन्नय भाग्य कलेगलु बेरेतु सुखगल सलिसि सलहलि
सिरिये श्रीहरि राणि सरसिज नयने कल्याणिPsसरसिज नयने कल्याणि ||१८ ||
सर्व सौख्य प्रदायि देविये सर्व भक्तरिगभय दायिये
सर्व कालदलचल कलेगल नीडु एन्नल्लि |
सर्व जगदोलु घन्न निन्नय सर्व सुकला पूर्णनेनिसि
सर्व विभवदि मेरेसु संतत विघ्नविल्लदले Psविघ्नविल्लदले ||१९ ||
मुददि एन्नय फालदलि सिरि पदुमे निन्नय परम कलेयू
ओदगि सर्वदा इरलि श्री वैकुंठ गत लक्ष्मी |
उदयवागलि नेत्रयुगलदि सदय मूर्तिये सत्यलोकद

चदुरे लकुमिये कलेयु वाक्यदि निलिसलनवरत॥निलिसलनवरत ॥२०॥
श्वेत दिवियोलगिरुव लकुमिये नीतवागिह कलेयु नित्यदि
माते एन्नय करदि संतत वासवागिरलि |
पाथो निधियोलगिर्प लकुमिये जातकलेयु ममांगदलि संप्रीति
पूर्वकविरलि सर्वदा पाही मां पाही॥पाही मां पाही ॥२१॥
इंदु सूर्यरु एल्लि तनक कुंददले ताविरुवरो सिरि
इंदिरेशनु याव कालद तनक इरुतिर्प |
इंदिरात्मक कलेय रूपगलंदिनद परि अंतरिर्पवु
कुंदु इल्लदे एन्न बलियलि तावे नेलसिरलि॥तावे नेलसिरलि ॥२२॥
सर्वमंगले सुगुण पूर्णले सर्व ऐश्वर्यादिमंडिते
सर्व देवगणाभिवंद्यले आदिमहालक्ष्मी |
सर्वकले संपूर्णे निन्नय सर्वकलेगलु एन्न हृदयदि
सर्वकालदलिरलि एंदु निन्न प्रार्थिसुवे॥निन्न प्रार्थिसुवे ॥२३॥
जननी एन्न अज्ञान तिमिरव दिनदिनदि संहरिसि निन्नवनेनिसि
ध्यानव माल्प निर्मल ज्ञान संपदवा |
कनक मणि धन धान्य भाग्यव इनितु नी एनगित्तु पालिसु
मिनुगुतिह घनवाद निन्नय कलेयु शोभिसलि॥निन्नय कलेयु शोभिसलि ॥२४॥
निरुत तमतति हरिप सूर्यन तेरदि क्षिप्रदि हरिसलक्ष्मिय
सरकु माडदे तरिदु ओडिसु दुरित राशिगला |
परिपरिय सौभाग्य निधियनु हरुषदिंदलि नीडि एन्ननु
थरथरदि कृत कृत्यनिलेयोलगेनिसु दयदिंद॥एनिसु दयदिंद ॥२५॥
अतुल महदैश्वर्य मंगलततियु निन्नय कलेगलोलगे
विततवागि विराजमानदलिर्प कारणदी |
श्रुतियु निन्नय महिमे तिलियदु स्तुतिसबल्लेने ताये पेल्वुदु
मतिविहीननु निन्न करुणके पात्रनेनिसम्म॥करुणके पात्रनेनिसम्म ॥२६॥
निन्न महादावेश भाग्यके एन्न अर्हन माडु लकुमिये
घन्नतर सौभाग्य निधि संपन्ननेनिसेन्न |
रन्ने निन्नय पादकमलव मन्नदलि संस्तुतिसि बेडुवे
निन्न परतर करुण कवचव तोडिसि पोरेयम्म॥कवचव तोडिसि पोरेयम्म ॥२७॥
पूत नरननु माडि कलेगल व्रातदिंदलि एन्न निष्ठव
घातिसीगले एनगे ओलिदु बंदु सुलि मुंदे |
माते भार्गवि करुणि निन्नय नाथनिंदोडगूडि संतत
प्रीतलागिरु एन्न मनेयोलु निल्लु नी बिडदे॥मनेयोलु निल्लु नी बिडदे ॥२८॥
परमसिरि वैकुंठ लकुमिये हरिय सहितदलेन्न मुंदके
हरुष पडुतलि बंदु शोभिसु काल कलेयदले |
वरदे ना बारेंदु निन्ननु करेदे मनवनु मुट्टि भकुतिय
भरदि बागिद शिरदि नमिसुवे कृपेय माडेंदु॥कृपेय माडेंदु ॥२९॥
सत्यलोकद लकुमि निन्नय सत्य सन्निधि एन्न मनेयलि
नित्य नित्यदि पेर्चि हब्बलि जगदि जनततिगे |
अत्यधिक आश्चर्य तोरिसि मर्त्यरोत्तमनेनिसि नी कृत

कृत्यनीपरि माडि सिरि हरिगूडि नलिदाडे हरिगूडि नलिदाडे ||३० ||
क्षीरवारिधि लकुमियेे पतिनारसिंहन कूडि बरुवुदु
दूर नोडदे सारेगेरेदु प्रसाद कोडु एनगे |
वारिजाक्षियेे निन्न करुणासार पूर्ण कटाक्षदिंदलि
बारि बारिगे नोडि पालिसु परम पावन्ने परम पावन्ने ||३१ ||
श्वेत द्वीपद लकुमि त्रिजगन्माते नी एन्न मुंदे शीघ्रदि
नाथनिंदोडगूडि बारे प्रसन्न मुख कमले |
जातरूप सुतेजरूपले मातरिश्व मुखार्चितांघ्रिये
जातरूपोदरांड संघके माते प्रख्याते माते प्रख्याते ||३२ ||
रत्नगर्भन पुत्रि लकुमियेे रत्नपूरित भांड निचयव
यत्नपूर्वक तंदु एन्नय मुंदे नी निल्लु |
रत्नखचित सुवर्णमालेय रत्नपदकद हार समुदय
जत्नदिंदलि नीडि सर्वदा पाही परमाप्ते पाही परमाप्ते ||३३ ||
एन्न मनेयलि स्थैर्यदिंदलि इन्नु निश्चललागि निंतिरु
उन्नतादैश्वर्य वृद्धियगैसु निर्मलले |
सन्नुतांगियेे निन्न स्तुतिपे प्रसन्न हृदयदि नित्य नी प्रहसन्मुखदि
माताडु वरगल नीडि नलिदाडु नीडि नलिदाडु ||३४ ||
सिरियेे सिरि महाभूति दायिके परमे निन्नोलगिर्प सुमहत्तरनवात्मक
निधिगलूर्ध्वके तंदु करुणदलि |
करदि पिडिददनेत्ति तोरिसि त्वरदि नी एनगित्तु पालिसु
धरणि रूपले निन्न चरणके शरणु ना माल्पे शरणु ना माल्पे ||३५ ||
वसुधे निन्नोलगिर्प वसुवनु वशव माल्पुदु एनगे सर्वदा
वसुसुदोग्ध्रियु एंब नामवु निनगे इरुतिहुदु
असम महिमले निन्न शुभतम बसुरिनोलगिरुतिर्प निधियनु
बेसेसु ईगले हसिदु बंदगे अशनवित्तंते अशनवित्तंते ||३६ ||
हरिय राणियेे रत्नगर्भले सरियु यारी सुरर स्तोमदि
सरसिजाक्षियेे निन्न बसिरोलगिरुव नवनिधिया |
मेरेव हेमद गिरिय तेरदलि तेरेदु तोरिसि सलिसु एनगे
परम करुणाशालि नमो नमो एंदु मोरे होक्के नमो नमो एंदु मोरेहोक्के ||३७ ||
रसतलद सिरि लकुमिदेवियेे शशि सहोदरि शीघ्रदिंदलि
असम निन्नय रूप तोरिसु एन्न पुरदल्लि |
कुसुमगंधियेे निन्ननरियेनु वसुमती तलदल्लि बहुपरि
होसतु एनिपुदु निन्न ओलुमेयु सकल जनततिगे सकल जनततिगे ||३८ ||
नागवेणियेे लकुमि नी मनोवेगदिंदलि बंदु एन्नय
जागुमाडदे शिरदि हस्तवनिट्टु मुददिंद |
नीगिसी दारिद्य दुःखव सागिसी भवभार पर्वत
तूगिसु नी एन्न सदनदि कनक भारगला कनक भारगला ||३९ ||
अंजबेडवो वत्सा एनुतलि मंजुलोक्तिय नुडिदु करुणा –
पुंज मनदलि बंदु शीघ्रदि कार्य माडुवुदु |
कंजलोचने कामधेनु सुरंजिपामर तरुवु एनिसुवि

संजयप्रदलागि संतत पाही मां पाही पाही मां पाही ||४० ||
देवि शीघ्रदि बंदु भूमिदेवि संभवे एन्न जननिये
कामनय्यन राणि निन्नय भृत्य नानेंदु |
भाविसीपरि निन्न हुडुकिदे सेवे नी कैकोंडु मन्मनो
भाव पूर्तिसि करुणिसेन्ननु शरणु शरणे०बे शरणु शरणे०बे ||४१ ||
जागरूकदि निंतु मत्ते जागरूकदि एनगे नित्यदि
त्यागभोग्यके योग्यवेनिपाक्षय्य हेममय |
पूग कनक संपूर्ण घटगल योग माल्पुदु लोकजननी
ईग एन्नय भार निन्नदु करेदु कै पिडिये अम्मा करेदु कै पिडिये ||४२ ||
धरणिगत निक्षेपगलनुद्धरिसि नी एन्न मुंदे सेरिसि
किरिय नगेमोगदिंद नोडुत नीडु नवनिधिय |
स्थिरदि एन्न मंदिरदि निंतु परम मंगलकार्य माडिसु
सिरिये नीने ओलिदु पालिसु मोक्ष सुख कोनेगे मोक्ष सुख कोनेगे ||४३ ||
निल्ले लकुमी स्थैर्य भावदि निल्लु रत्न हिरण्य रूपले
एल्ल वरगलनित्तु ननगे प्रसन्नमुखलागु
एल्लो इरुतिह कनक निधिगलनेल्ल नी तंदु नीडुवुदै
पुल्ललोचने तोरि निधिगल तंदु पोरेयम्म तंदु पोरेयम्म ||४४ ||
इंद्रलोकदलिद्द तेरदलि निंद्रु एन्नय गृहदि नित्यदि
चंद्रवदनेये लकुमि देवि नीडे एनगभया |
निंद्रलारेनु ऋणद बाधेगे तंद्रमति नानादे भवदोलुपेंद्र
वल्लभे अभय पालिसु नमिपे मज्जननी नमिपे मज्जननी ||४५ ||
बद्ध स्नेह विराजमानले शुद्ध जांबूनददि संस्थिते
मुद्दु मोहन मूर्ति करुणदि नोडे नी एन्न |
बिद्दे ना निन्न पाद पदुमके उद्धरिपुदेंदु बेडिदे अनिरुद्ध
राणि कृपाकटाक्षदि नोडे माताडे नोडे माताडे ||४६ ||
भूमि गत सिरिदेवि शोभिते हेममये एल्लेल्लु इरुतिहे
तामरस संभूते निन्नय रूप तोरेनगे |
भूमियलि बहु रूपदिंदलि प्रेमपूर्वक क्रीडेगैय्युत
हेममय परिपूर्ण हस्तव शिरद मेलिरिसु हस्तव शिरद मेलिरिसु ||४७ ||
फलगलीव सुभाग्य लकुमिये ललित सर्व पुराधि वासिये
कलुष शून्यले लकुमि देवियॆ पूर्ण माडेन्न |
कुलजे कुंकुम शोभिपालले चलित कुंडल कर्ण भूषिते
जलजलोचने जाग्र कालदि सलिसु एनगिष्ट सलिसु एनगिष्ट ||४८ ||
ताये चेंददलंदयोध्यदि दयदि नीने निंतु पट्टणभयव
ओडिसि जागु माडदे मत्ते मुददिंद |
जयव नीडिद तेरदि एन्नालयदि प्रेमदि बंदु कूड्वदु
जयप्रदायिनि विविध वैभवदिंद ओडगूडि वैभवदिंद ओडगूडि ||४९ ||
बारे लकुमि एन्न सदनके सारिदेनु तव पाद पदुमके
तोरि एन्नय गृहदि नीने स्थिरदि नेलेसिद्दु |

सार करुणारसवु तुंबिद चारुजलरुह नेत्रयुग्मले
पारुगाणिसु परम करुणिये रिक्ततनदिंदPsरिक्ततनदिंद ||५० ||
सिरिये निन्नय हस्त कमलव शिरदि नीने इरिसि एन्ननु
करुणवेंबामृतद कणदलि स्नानगैसिन्नु |
स्थिरदि स्थितियनु माडु सर्वदा सर्व राज गृहस्थ लकुमिये
त्वरदि मोददि युक्तलागिरु एन्न मुंदिन्नुPsएन्न मुंदिन्नु ||५१ ||
नीने आशीर्वदिसि अभयव नीने एनगे इत्तु सादर
नीने एन्न शिरदलि हस्तव इरिसु करुणदलि |
नीने राजर गृहद लक्ष्मियु नीने सर्व सुभाग्य लक्ष्मियु
हीनवागदे निन्न कलेगल वृद्धि माडिन्नुPsवृद्धि माडिन्नु ||५२ ||
आदि सिरि महालकुमि विष्णुविनमोदमय वामांक निनगनुवाद
स्वस्थलवेंदु तिलिदु नीने नेलेसिद्दी |
आदि देविये निन्न रूपव मोददिंदलि तोरि एन्नोलु
क्रोधविल्लदे नित्य एन्ननु पोरेये करुणदलिPsपोरेये करुणदलि ||५३ ||
ओलिये नी महालकुमि बेगने ओलिये मंगलमूर्ति सर्वदा
नलिये चलिसदे हृदय मंदिरदल्लि नीनिरुत |
ललितवेदगलेल्लि तनक तिलिदु हरिगुण पाडुतिर्पुवु
जलजलोचन विष्णु निन्नोलु अल्लि नीनिर्पेPsअल्लि नीनिर्पे ||५४ ||
अल्लि परियंतरदि निन्नय एल्ल कलेगलु एन्न मनेयलि
निल्लिसी सुख व्रात नीडुत सर्वकालदलि |
एल्ल जनकाह्लाद चंदिर कुल्लदे शुभ पक्ष दिनदोलु
निल्लदले कले वृद्धियैदुव तेरदि माडेन्नPsतेरदि माडेन्न ||५५ ||
सिरिये नी वैकुंठ लोकदि सिरिये नी पाल्गडल मध्यदि
इरुव तेरदलि एन्न मनेयोलु विष्णु सहितागि
निरुत ज्ञानिय हृदय मध्यदि मिरुगुवंददलेन्न सदनदि
हरिय सहितदि नित्य राजिसु नीडि कामितवाPsनीडि कामितवा ||५६ ||
श्रीनिवासन हृदय कमलदि नीने निंतिरुवंते सर्वदा
आ नारायण निन्न हृदयदि इरुव तेरदंते |
नीनु नारायणनु इब्बरु सानुरागदि एन्न मनदोलु
न्यूनवागदे निंतु मनोरथ सलिसि पोरेयेंदेPsमनोरथ सलिसि पोरेयेंदे ||५७ ||
विमलतर विज्ञान वृद्धिय कमले एन्नय मनदि माल्पुदु
अमित सुख सौभाग्य वृद्धिय माडु मंदिरदि |
रमेये निन्नय करुण वृद्धिय सुमनदिंदलि माडु एन्नलि
अमरपादपे स्वर्णवृष्टिय माडु मंदिरदिPsवृष्टिय माडु मंदिरदि ||५८ ||
एन्न त्यजनव माडदिरु सुररन्ने आश्रित कल्पभूजले
मुन्न भक्तर चिंतामणि सुरधेनु नीनम्म |
घन्न विश्वद माते नीने प्रसन्नलागिरु एन्न भवनदि
सन्नुतांगिये पुत्र मित्र कलत्र जन नीडेPsकलत्र जन नीडे ||५९ ||
आदि प्रकृतिये बोम्मनांडके आदि स्थितिलय बीज भूतले
मोद चिन्मय गात्रे प्राकृत देह वर्जितले |

वेदवेद्यले बोम्मनांडव आदिकूर्मद रूपदिंदलि अनादिकालदि
पोत्तु मेरेवदु एनु चित्रविदुPkनु चित्रविदु ||६० ||
वेद मोदलु समस्त सुररु वेद स्तोमगलिंद निन्न अगाध
महिमेय पोगललेंदरे शक्तरवरल्ल
ओदुबारद मंदमति नानाद कारण शक्तियिल्लवु
बोधदायके नीने स्तवनव गैसु एन्निंदPkसु एन्निंद ||६१ ||
मंद निंदलि सुगुण वृंदव चंददलि नी नुडिसि एन्नय
मंदमतियनु तरिदु निर्मल ज्ञानियेंदेनिसु
इंदिरे तव पादपदुमद द्वंद्व स्तुतिसुव शकुति इद्दु
कुंदु बारद कविते पेलिसु एंदु वंदिपेनुPkदु वंदिपेनु ||६२ ||
वत्सन्वचनव केले नी सिरि वत्सलांछन वक्षमंदिरे
तुच्छ माडदे मनके तंदु नीने पालिपुदु |
स्वच्छवागिह सकल संपद उत्साहदि नी नीडि मन्मनो
इच्छे पूर्तिसु जननि बेडुवे नीने सर्वज्ञेPkननि नीने सर्वज्ञे ||६३ ||
निन्न मोरेयनुयैदि पूर्वदि धन्यरादरु धरणियोलगापन्न
पालके एंदु निन्ननु नंबि मोरहोक्के |
निन्न भकुतगनंत सौख्यवु निन्नले परभकुति अवनिगे
निन्न करुणके पात्रनागुवनेंदु श्रुतिसिद्धPkदु श्रुतिसिद्ध ||६४ ||
निन्न भकुतगे हानि इल्लवु बन्न बडिसुवरिल्ल एंदिगु
मुन्न भवभयविल्लवेंदा श्रुतियु पेलुवुदु |
एन्न करुणाबलवु अवनलि घन्नवागि इरुवुदेंब
निन्न वचनव केलि ई क्षण प्राण धरिसिहेनुPkाण धरिसिहेनु ||६५ ||
नानु निन्नाधीन जननियॆ नीनु एन्नलि करुण माल्पुदु
हीन बडतन दोष कलेदु नीने नेलसिद्दु |
मान मने धन धान्य भकुति ज्ञान सुख वैराग्य मूर्ति
ध्यान मानस पूजे माडिसु नीने एन्निंदPkने एन्निंद ||६६ ||
निन्न अंतःकरणदिंदलि मुन्न नाने पूर्ण कामनु
इन्नु आगुवे परम भक्त कुचेलनंददलि |
बिन्नैपे तव पाद पद्मके बन्न ना बडलारे देवि
एन्न नी कर पिडिदु पालिसु रिक्ततनदिंदPkालिसु रिक्ततनदिंद ||६७ ||
क्षणवू जीविसलारे निन्नय करुणविल्लदे अवनि तलदलि
क्षणिक फलगल बयसलारेने मोक्ष सुख दाये |
गणने माडदे नीच देवर हणिदु बिडुवी बाधे कोट्टरे
पणव माडुवे निन्न बलियलि मिथ्यवेनिल्लPkमिथ्यवेनिल्ल ||६८ ||
तनयनरि वात्सल्यदिंदलि जननि हाललि तुंबि तुलुकुव
स्तनवनित्तु आदरिसि उणिसुव जननि तेरदंते
निनगे सुररोलु समर काणेनु अनिमिशेषर पडेदु पालिपि
दिनदिनदि सुखवित्तु पालिसु करुण वारिधियेPkालिसु करुण वारिधियॆ ||६९ ||
एसु कल्पदि निनगे पुत्रनु आसु कल्पदि माते नीने
लेषविदकनुमानविल्लवु सकल श्रुतिसिद्ध |

लेसु करुणासारवेनिसुव सूसुवामृतधारदिंदलि
सोसिनिंदभिषेकगैदभिलाषे सलिसम्म₧अभिलाषे सलिसम्म ॥७० ॥
दोषमंदिरनेनिप एन्नलि लेष पुडकलु गुणगलिल्ल विशेष
वृष्टि सुपांसु कणगल गणने बहु सुलभ
राशियंददलिप्प एन्नघ सासिराक्षगशक्य गणिसलु
एसु पेललि ताये तनयन तप्पु सहिसम्म₧अम्मा तप्पु सहिसम्म ॥७१ ॥
पापिजनरोलगग्रगण्यनु कोप पूरित चित्त मंदिर
ई पयोजभवांड पुडुकिदरारु सरियिल्ल
श्रीपनरसिये केलु दोषवु लोपवागुव तेरदि माडि
रापुमाडदे सलहु श्रीहरि राणि कल्याणि₧हरि राणि कल्याणि ॥७२ ॥
करुणशालियरोलगे नी बलु करुणशालियु एंदु निन्नय
चरणयुगकभिनमिसि सार्देनु पोरेये पोरेयेंदु |
हरण निल्लदु हणवु इल्लदे शरणरनुदिन पोरेव देवि सुपरण
वाहन राणि एन्ननु काये वरवीये₧काये वरवीये ॥७३ ॥
उदर कर शिर टोंक सूलिय मोदले सृष्टियगैय्यदिरलौषधद
सृष्टियु व्यर्थवागुव तेरदि जगदोलगे |
विधियु एन्ननु सृजिसदिद्दरे पदुमे निन्न दयालुतनवु
पुदुगि पोदितु एंदु तिलिदा बोम्म सृजिसिदनु₧बोम्म सृजिसिदनु ॥७४ ॥
निन्न करुणवु मोदलु देवियै एन्न जननवु मोदलु पेल्वदु
मुन्न इदननु विचारगैदु वित्त एनगीये |
घन्न करुणानिधियु एनुतलि बिन्नहव ना माडि याचिपे
इन्नु निधियनु इत्तु पालिसु दूर नोडदले₧दूर नोडदले ॥७५ ॥
तंदे तायियु नीने लकुमि बंधु बलगवु नीने देवि
हिंदे मुंदे एनगे नीने गुरुवु सद्गतियु |
इंदिरेये एन्न जीव कारिणिसंदेह एनगिल्ल परमानंद
समुदय नीडे करुणव माडे वर नीडे₧करुणव माडे वर नीडे ॥७६ ॥
नाथलेनिसुवि सकल लोकके ख्यातलेणिसुवे सर्व कालदि
प्रीतलागिरु एनगे सकलवु नीने निजवेंदे |
माते नीने एनगे हरि निज तात ईर्वरु नीवे इरलि
रीतियिंदलि भवदि तोललिपुदेनु निम्म न्याय₧इदेनु निम्म न्याय ॥७७ ॥
आदि लकुमि प्रसन्नलागिरु मोदज्ञान सुभाग्य धात्रिये
छेदिसज्ञानादि दोषव त्रिगुणवर्जितले |
सादरदि नी करेदु कै पिडि माधवन निज राणि नमिसुवे
बाधे गोलिसुव ऋणव कलेदु सिरिये पोरेयेंदे₧अम्मा सिरिये पोरेयेंदे ॥७८ ॥
वचनजाड्यव कलेव देवियै एचेये नूतन स्पष्ट वाक्पद
निचय पालिसि एन्न जिह्वाग्रदलि नी निंतु |
रचने माडिसु एन्न कवितेय प्रचुरवागुव तेरदि माल्पुदु
उचितवे सरियेनु पेल्वदु तिलिये सर्वज्ञे₧लक्ष्मी तिलिये सर्वज्ञे ॥७९ ॥
सर्व संपददिंद राजिपे सर्व तेजोराशिगाश्रये
सर्वरुत्तम हरिय राणिये सर्वरुत्तमले |

सर्व स्थलदलि दीप्यमानले सर्व वाक्यके मुख्य मानिये
सर्व कालदलेन्न जिह्वदि नीने नटिसुवुदुPsअम्मा नीने नटिसुवुदु ॥८० ॥
सर्व वस्त्वपरोक्ष मोदलू सर्व महापुरुषार्थ दातले
सर्वकांतिगलोलगे शुभ लावण्यदायकले |
सर्व कालदि सर्व धात्रिये सर्व रीतिलि सुमुखियागि
सर्व हेम सुपूर्णे एन्नय नयनदोलगेसेयेPsएन्नय नयनदोलगेसेये ॥८१ ॥
सकल महापुरुषार्थदायिनि सकल जगवनु पेत्त जननिये
सकलरीश्वरी सकल भयगल नित्य संहारी |
सकल श्रेष्ठले सुमुखियागि सकल भाववं धरिसि सर्वदा
सकल हेम सुपूर्णे एन्नय नयनदोलगेसेयेPsअम्मा नयनदोलगेसेये ॥८२ ॥
सकल विध विघ्नापहारिणिसकल भक्तोद्धारकारिणि
सकल सुख सौभाग्यदायिनि नेत्रदोलगेसेये |
सकल कलेगल सहित निन्नय भकुतनादवनेंदु सर्वदा
व्यकुतलागिरु एन्न हृदयद कमल मध्यदलिPsहृदयद कमल मध्यदलि ॥८३ ॥
निन्न करुणा पात्रनागिह एन्न गोसुग नीने त्वरदि प्रसन्नलाग्यधिदेवगणनुते
सुगुणे परिपूर्णे |
एन्न पेत्तिह ताये सर्वदा सन्निहितलागेन्न मनेयोलु
निन्न पति सहवागि सर्वदा निलिसु शुभदायेPsनिलिसु शुभदाये ॥८४ ॥
एन्न मुखदलि नीने निंतु घन्ननिवनेंदेनिसि लोकदि
धन्य धन्यन माडुPsवरगल नीडु नलिदाडु |
अन्य ना निनगल्ल देवी जन्यनादवनेंदु तिलिदु
अन्न वसनव धान्य धनवनु नीने एनगीयेPsलक्ष्मी नीने एनगीये ॥८५ ॥
वत्स केलेलो अंजबेडवो स्वच्छ एन्नय करव शिरदलि
इच्छे पूर्वक नीड्दे नडि सरवत्र निर्भयदि |
उत्सहात्म मनोनुकंपिये प्रोत्सहदि कारुण्य दृष्टिलि
तुच्छ माडदे वीक्षिसीगले लक्ष्मी ओलि एनगेPsलक्ष्मी ओलि एनगे ॥८६ ॥
मुददि करुण कटाक्ष जनरिगे उदयवागलु सकल संपद
ओदगि बरुवुदु मिथ्यवल्लवु बुधर सम्मतवु |
अदके निन्नय पदव नंबिदे मुददि एन्नय सदनदलि नीनोदगि
भाग्यद निधिय पालिसु पदुमे नमिसुवेनुPsपालिसु पदुमे नमिसुवेनु ॥८७ ॥
रामे निन्नय दृष्टिलोकके कामधेनेंदेनिसिकोंबदु
रामे निन्नय मनसु चिंतारत्न भजिपरिगे |
रामे निन्नय करद द्वंद्ववु कामितार्थव केल्व जनरिगे
कामपूर्तिप कल्पवृक्षवु ताने एनिसिहुदुPsवृक्षवु ताने एनिसिहुदु ॥८८ ॥
नववेनिपनिधि नीने इंदिरे तव दयाभिध रसवे एनगे
ध्रुवदि देवि रसायनवे सरि सर्वकालदलि |
भुवन संभवे निन्न मुखवु दिवियोलोप्पुव चंद्रनंददि
विविधकलेगल पूर्णवाद्यखिलार्थ कोडुतिहुदुPsअखिलार्थ कोडुतिहुदु ॥८९ ॥
रसद स्पर्शदलिंद लोहवु मिसुणि भाववं ऐदो तेरदलि
असम महिमले निन्न करुण कटाक्ष नोटदलि |

वसुधे तलदोलगिर्प जीवर अशुभ कोटिगलेल्ल पोगी
कुसुम गंधिये मंगलोत्सव सततवागुवुदु उत्सव सततवागुवुदु ||९० ||
नीडु एंदरे इल्लवेंबुव रूढि जीवर मातिगंजुत
बेडिकोंबुदकीग निन्ननु शरणु होंदिदेनु |
नोडि करुण कटाक्षदिंदय माडि मनदभिलाषे पूर्तिसि
नीडु एनगखिलार्थ भाग्यव हरिय सहितदलि भाग्यव हरिय सहितदलि ||९१ ||
कामधेनु सुकल्पतरु चिंतामणि सहवागि निन्नय
कामितार्थगलीव कलेगललुणिसि इरुतिहवु |
रामे निन्नय रसरसायन स्तोमदिं शिर पाद पाणि
प्रेमपूर्वक स्पर्शवागलु हेमवागुवुदु हेमवागुवुदु ||९२ ||
आदि विष्णुन धर्मपत्नियै सादरदि हरि सहित एन्नलि
मोददिंदलि सन्निधानव माडे करुणदलि |
आदि लक्ष्मिये परमानुग्रहवाद मात्रदि एनगे पदु पदे
आदपुदु सर्वत्र सर्वदा निधिय दर्शनवु निधिय दर्शनवु ||९३ ||
आव लक्ष्मी हृदय मंत्रव सावधानदि पठणेगैवनु
आव कालदि राज्यलक्ष्मीयनैदु सुखिसुवनु |
आव महादारिद्य दोषियु सेविसे महा धनिकनागुव
देवि अवनालयदि सर्वदा स्थिरदि निलिसुवलु ||९४ ||
लकुमि हृदयद पठणे मात्रदि लकुमि ता संतुष्टलागि
सकल दुरितगललिदु सुख सौभाग्य कोडुतिहलु |
विकसिताननै विष्णुवल्लभे भकुत जनरनु सर्व कालदि
व्यकुतलाद्यवरन्न पोरेवलु तनयरंददलि लक्ष्मी तनयरंददलि ||९५ ||
देवि हृदयवु परम गोप्यवु सेवकनिगखिलार्थ कोडुवुदु
भाव पूर्वक पंचसाविर जपिसे पुनश्चरण |
ई विधानदि पठणे माडलु ता ओलिदु सौभाग्य निधियनु
तीव्रदिंदलि कोट्टु सेवकरल्लि निलिसुवलु सेवकरल्लि निलिसुवलु ||९६ ||
मूरु कालदि जपिसलुत्तम सार भकुतिलि ओंदु कालदि
धीरमानव पठिसलवनखिलार्थ ऐदुवनु |
आरु पठणवगैय्यलिदननुभूरि श्रवणव गैद मानव
बारि बारिगे धनव गलिसुव सिरिय करुणदलि सिरिय करुणदलि ||९७ ||
श्री महत्तर लक्ष्मिगोसुग ई महत्तर हृदय मंत्रव
प्रेमपूर्वक भार्गवारद रात्रि समयदलि |
नेमदिंदलि पंचवारव कामिसीपरि पठणे माडलु
कामितार्थवनैदि लोकदि बाल्व मुददिंद बाल्व मुददिंद ||९८ ||
सिरिय हृदय सुमंत्रदिंदलि स्मरिसि अन्नव मंत्रिसिडलु
सिरिय पति तानवर मंदिरदोलगे अवतरिप |
नरने आगलि नारि आगलि सिरिय हृदय सुमंत्रदिंदलि
निरुत मंत्रित जलव कुडियलु धनिक पुट्टुवनु धनिक पुट्टुवनु ||९९ ||
आवनाश्वीज शुक्ल पक्षदि देवि उत्सव कालदोलु ता
भाव शुद्धिलि हृदय जप ओंदधिक दिनदिनदि |

ई विधानदि जपव माडलु श्रीवनदि संपदवनैदुव
श्रीवनिते ता कनकवृष्टिय करेवलनवरत करेवलनवरत ||१०० ||
आव भकुतनु वरुष दिन दिन भाव शुद्धिलि एल्ल पोत्तु
सावधानदि हृदय मंत्रव पठिसलवनाग |
देवि करुणकटाक्षदिंदलि देव इंद्रनिगधिकनागुव
ई वसुंधरेयोलगे भाग्यद निधियु तानेनिप भाग्यद निधियु तानेनिप ||१०१ ||
श्रीश पददलि भकुति हरिपद दास जनपद दास भावव
ईसु मंत्रगलर्थ सिद्धियु गुरुपद स्मृतियु |
लेसु ज्ञान सुबुद्धि पालिसु वासवागिरु एन्न मनेयलि
ईश सह एन ताये उत्तम पदवु नी सिरिये उत्तम पदवु नी सिरिये ||१०२ ||
धरणि पालकनेनिसु एन्ननु पुरुषरुत्तमनेनिसु सर्वदा
परमवैभव नानाविधवागर्थ सिद्धिगला |
हिरिदु कीर्तिय बहल भोगव परम भक्ति ज्ञान सुमतिय
परिमितिल्लदे इत्तु पुनरपि सलहु श्रीदेवी सलहु श्रीदेवी ||१०३ ||
वादमाडुदकर्थ सिद्धियु मोदतीर्थर मतदि दीक्षवु
सादरदि नीनित्तु पालिसु वेददभिमानी |
मोददलि पुत्रार्थ सिद्धियु ओददले सिरि ब्रह्मविद्यवु
आदि भार्गवि इत्तु पालिसु जन्म जन्मदली जन्म जन्मदली ||१०४ ||
स्वर्ण वृष्टिय एन्न मनेयलि करिय धान्य सुवृद्धि दिन दिन
भरदि नी कल्याण वृद्धिय माडे संभ्रमदी |
सिरिये अतुल विभूति वृद्धिय हरुषदिंदलिगैदु धरेयोलु
मेरेये संतत उपमेविल्लदे हरिय निज राणि हरिय निज राणि ||१०५ ||
मंदहास मुखारविंदले इंदुसूर्यर कोटिभासले
सुंदरांगिये पीतवसनले हेमभूषणले |
कुंदु इल्लद बीज पूरित चंदवाद सुहेमकलशगलिंद
नीनोडगूडि तीव्रदि बरुवुदेन्न मनेगे बरुवुदेन्न मनेगे ||१०६ ||
नमिपे श्री हरि राणि निन्न पद कमलयुगकनवरत भकुतिलि
कमले निन्नय विमल करयुग एन्न मस्तकदी |
ममतेयिंदलि इट्टु निश्चल अमित भाग्यव नीडे त्वरदि
कमलजातले रमेये नमो नमो माल्पेननवरत नमो नमो माल्पेननवरत ||१०७
||
माते निन्नय जठरकमल सुजातनागिह सुतन तेरदि
प्रीति पूर्वक भाग्य निधिगलनित्तु नित्यदलि |
नीत भकुती ज्ञान पूर्वक दात गुरु जगन्नाथ विट्ठलन
प्रीतिगोलिसुव भाग्य पालिसि पोरेये नी एन्न लक्ष्मी पोरेये अम्मा पोरेये ||१०८ ||